भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, पालमपुर द्वारा आर्थिकी सुधार हेतु जनजातीय उप-योजना के अंतर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

भाकृअनुप-भारतीय कषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, पालमपुर द्वारा "गद्दी बकरियों में अतिसार का चिकित्सीय नियंत्रण" हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण किया, जिसमें अति दुर्गम गांव घड़ोह पंचायत न्याग्रा तहसील भरमौर, जिला चम्बा हि.प्र. से 16 प्रतिभागियों ने उपस्थिति दी। डा. गोरख मल, प्रमुख क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। उन्होंने संस्थान द्वारा चलाई जा रही जनजातीय उप-योजना की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि यह उप-योजना वर्ष 2016 में प्रारम्भ हुई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के अति निर्धन परिवारों की आर्थिकी को सुदृढ़ करना है। अति दुर्गम क्षेत्र भरमौर विकासखंड की पंचायतों गरोला, उल्लांसा, बडगांव, चोबीया, खनी, पोलन व कुगती में इस योजना के अन्तर्गत अति निर्धन जनजातीय परिवारों को लाभांवित किया जा चुका है, जिसमें किसानों/पशुपालकों को अभी तक लगभग 520 बकरियां मुफ्त आवंटित की जा चुकी है। उन्होंने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा तैयार की गई वैक्सीन एवं टीकों की विस्तृत जानकारी प्रदान की, जैसे कि हाल ही में लम्पी स्किन वायरस हेतु वैक्सीन हमारे संस्थान द्वारा तैयार की गई है।

जनजातीय उपयोजना प्रभारी डा. उमा शंकर पति, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा भारत में पाये जानी वाली विभिन्न बकरियों की नस्लों एवं हिमाचल प्रदेश में जनजातीय क्षेत्रों में गद्दी प्रजाति की बकरी पालन की विशेषता के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

प्रशिक्षण के दौरान किसान गोष्ठी भी की गई जिसमें पशुपालन सम्बन्धित समस्याओं का निवारण विषय विशेषज्ञों द्वारा किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा गद्दी बकरियों में अतिसार की समस्या, उपचार, दवाईयों के बारे में प्रशिक्षुओं को विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को केन्द्र की प्रयोगशालाओं एवं चौ. स. कु. हि. प्र. कृ. वि., पालमपुर में फीड़ एवं पोल्ट्री प्लांट का भ्रमण करवाया गया। प्रतिभागियों को प्रमुख क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण हेतु प्रमाण पत्र भी आवंटित किये गये।

डा. बीरबल सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, डा. देवी गोपीनाथ, वैज्ञानिक, डा. गौरी जैरथ, वैज्ञानिक, डा. अजेयता रियालच, वैज्ञानिक, श्री बलविन्द्र सिंह राणा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, श्री आर. रणजीत सिंह, तकनीकी अधिकारी, श्री जोंगा राम, तकनीकी सहायक एवं संविदा बिन्दुओं द्वारा महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।